This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

समरथ को नहिं दोष गुसाईं

जन नाट्य मंचऋ मार्च १९८०ऋ ३५ मिनटऋ ६ कलाकार। इस नाटक में पहली बार मदारी-जमूरा वेळ प्रचलित माध्यम का इस्तेमाल हुआ है। नाटक सामयिक या तात्कालिक आसानी से हो सकता है। ये १९८८ का रूप है।

पात्र विभाजन

१. मदारी
२. जमूरा
३. सेठ
४. बोरा
५. पुलिस
६. नेता

दो कलाकार उछल-वूळद करते हैं।

पहला : बस, बस, बस, बस, बस। बहुत करतब दिखा दिए। देखने वाले काप़ळी आ गए हैं। अब नाटक शुरू करो।

दूसरा : लो अभी लो।

अचानक बाहर से डमरू की आवाज़ आती है।

पहला : यह क्या बदतमीज़ी है? इस मदारी को भी अभी आना था! अबे ओ, चलता बन, यहां नाटक होने जा रहा है।

डमरू बजता रहता है। दोनों आवाज़ की तरप़ळ देखते हैं। पीछे से एक अभिनेता पुलिस वैळप लगाए, छड़ी फटकारता हुआ दोनों को ज़ोरदार लात रसीद करता है। दर्शकों को चीरता मदारी आता है। वह बोरा पहने है। बोरे वेळ सामने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है 'आटा, चावल, नून' और पीछे लिखा है 'घी, तेल, परचून'। सर पर रंग-बिरंगा पटका, आंखों पर धूप का चश्मा, सर पर मारवाड़ी पगड़ी, कंधे वेळ ऊपर ऐतिहासिक पात्रों वेळ अंदाज़ में दोहरे अर्ज़ की, तीन मीटर लंबी काली चादर। चादर वेळ पिछले कोने पकड़े पीछे दो और पात्र आते हैं। दर्शकों का शाहाना अंदाज़ से मुस्करा कर अभिनंदन करता है। आगे-आगे पुलिस अप़ळसर छड़ी को बंदूव़ळ की तरह कंधे पर रखे मार्च करता है। एक-एक करवेळ कलाकार बैठते हैं। मदारी सारे प्रॉपर्टीज़ बांट देता है। ख़ुद डमरू बजाकर तेज़ चलता है। जमूरा कलाबाज़ी खाकर अपनी काली चादर वेळ पास बैठता है।

मदारी : बात नहीं ज़ुल्फ की, सर मरोड़ा सांप का। वैळसा वुळंडल मार वेळ, बैठा है जोड़ा सांप का। जब यह चमेली की जड़ों में छुप कर बैठता है, तो इसवेळ काटे का पानी नहीं मांगता, लेकिन इंसान का बच्चा इससे खेलता है किसलिए? पापी पेट वेळ लिए। हिंदू को व़ळसम भगवान की, मुसलमान को पाक व़ुळरान की, हां तो मेहरबानों और व़ळद्रदानों, मैं अपना खेल शुरू करता हूं। जमूरे?

जमूरा : हां उस्ताद।

मदारी : खेल शुरू किया जाए?

जमूरा : किया जाए।

मदारी : मेहरबानों, व़ळद्रदानों, इससे पहले कि आज का खेल शुरू हो, ज़रा ज़ोर से ताली बजाना हां तो जमूरेऋ खेल शुरू किया जाए?

जमूरा : उस्ताद, शुरू तो किया जाए, पर लगता है तमाशबीन घर से रोटी खावेळ नहीं आए।

मदारी : मेहरबान, व़ळद्रदान, मेरे जमूरे में एक बहुत बुरी आदत है। जब तक पब्लिक ज़ोर से ताली नहीं बजाती यह साला खेल शुरू नहीं करता। हां तो ज़ोर से ताली बजाना क्यूं भई जमूरे, अब तो खुश है?

जमूरा : हां उस्ताद सच में मज़ा आ गया।

मदारी : तो लेट जा। गिली, गिली, गिली पूळ

जमूरा काली चादर ओढ़कर लेट जाता है।

उगते सूरज को नमस्कार, डूबते को सलाम
मुसलमान को आदाब, हिंदू को राम-राम!
हां तो मेहरबान, व़ळद्रदान, मैं जादू दिखाता हूं। तरह-तरह वेळ जादू। लड़की को लड़का और वुळत्ते से बकरी बनाता हूं। हां तो जमूरे, तू कौन?

जमूरा : मैं कौन।

मदारी : जमूरे लौट आ।

जमूरा : लौट आया।

मदारी : लड़वेळ भूत, भविष्य और वर्तमान का हाल बता।

जमूरा : एक साथ बता दूं?

मदारी : नहीं। धीरे-धीरे बताना नहीं तो खेल एक ही मिनट में चौपट हो जाएगा। देख तेरा ध्यान किधर है?

अपने डमरू को सप़ेळद रूमाल से ढककर ऊपर उठाता है।

जमूरा : देख लिया।
मदारी : क्या देखा?
जमूरा : जादूगर वेळ हाथ में कबूतर।
मदारी : ज़िंदा या मरा हुआ?
जमूरा : एकदम ज़िंदा, लेकिन डरा हुआ।
मदारी : कौन सा कबूतर?
जमूरा : असील!
मदारी : क्या कहा चील।
जमूरा : चील नहीं असील!
मदारी : इसकी चोंच में क्या है?
जमूरा : राशन कार्ड।
मदारी : अबे ये क्या होता है?
जमूरा : कबूतर ने अपनी ख़ुराक वेळ लिए राशनकार्ड बनवाया हुआ है।
मदारी : अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम,
और दास मलूका कह गए, सबवेळ दाताराम।
जमूरा : ये पुराने ज़माने की बातें हैं। अब नहीं चलतीं। अब तो कबूतर को लाइन में लगकर राशन कार्ड पर अपनी ख़ुराक का राशन लेना पड़ता है।
मदारी : अबे तेरा राशन कार्ड कहां है?
जमूरा : उस्ताद तुम पर हँसी आती है।
मदारी : *;ग़ुस्से सेद्ध* जमूरे, ज़ुबान संभालकर नहीं तो टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, जनता पार्टी बना दूंगा।
जमूरा : उस्ताद दुनिया को जादू दिखाते हो पर यह नहीं जानते कि राशन कार्ड हम जैसे रोज़ कमाकर खाने वालों का नहीं बना करता। राशन कार्ड तो उनका बनता है जिनवेळ पास रहने का पक्का ठिकाना हो।
मदारी : लड़वेळ लौट आ।
जमूरा : लौट आया।
मदारी : मैं जादूगर क्यों?
जमूरा : पेट की ख़ातिर।
मदारी : तू जमूरा क्यों?
जमूरा : पेट की ख़ातिर।
मदारी : क्या खाया?
जमूरा : हवा।
मदारी : पिया क्या?
जमूरा : एम. सी. डी. की टूटी का पानी।
मदारी : लड़वेळ! महंगाई वेळ बावजूद भी हमने खा पी लिया। अब जनता की वुळछ सोच।
जमूरा : सोच लिया।
मदारी : क्या सोचा?
जमूरा : ये सब लोग यहां आटा, चावल, चीनी वेळ लिए खड़े हैं।
मदारी : हां, इसीलिए लाइन लगाकर खड़े हैं। इस लाइन में खड़े लोगों की मदद करेगा?
जमूरा : करेगा।
मदारी : तो जा, सब वेळ लिए आटे, चावल, चीनी का इंतज़ाम कर।
जमूरा : उस्ताद न आज से तू मेरा गुरु न मैं तेरा चेला।
मदारी : अबे न मैं राजीव गांधी न तू अरुण नेहरू, हमारा नाता ऐसे नहीं टूटेगा।
जमूरा : उस्ताद□अगर, पूछो कि फलां साहब का लड़का पास होगा या पेळल तो बता सकता हूं। या उन साहब की खोई गाय मिलेगी या नहीं तो वो भी बता सकता हूं। लेकिन राशन नहीं ला सकता।
मदारी : जमूरे□साहब लोग ख़ुश हुए तो बहुत सा इनाम मिलेगा।
जमूरा : उस्ताद मेरे बस का नहीं है।
मदारी : जमूरे लौट आ।
जमूरा : लौट आया।
मदारी : अच्छा तो देख अब मेरा कमाल! मैं अभी अपने जादू वेळ ज़ोर से राशन पैदा करता हूं। सात समंदर पार मच्छंदर, अब तू अपने आप कलंदर।
जमूरा : बस, लेने लगे गुरुओं का नाम।
मदारी : अबे तो मैं जादूगर हूं! असली जादूगर। मेरे दादा वेळ परदादा ने अकबर को जादू दिखाया था।
जमूरा : ज़रूर दिखाया होगा। पर राजीव राजा वेळ राज में राशन पर तुम्हारा जादू नहीं चलेगा उस्ताद!
मदारी : बात तो तू ठीक ही कह रहा है। तो तू ही वुळछ कर□
पेळंक अपनी चद्दर को परे, और वुळछ कर ऐसा कमाल
कि ग़रीब हो खुश, और दुश्मन पामाल□
गिली, गिली, गिली, गिली पूळ!
जमूरा : अच्छा तो उस्ताद, अब देख मेरा कमाल।

□चादर पेळंककर खड़ा होता है। इधर उधर नज़र मारता है। मदारी एक तरफ़ळ हो जाता है।□

उस्ताद गोरखधंधे की पारदर्शी नज़र वेळ कंधे पर बैठकर
अपनी रेशमी मूंछों वेळ बालों को ऐंठकर,
आशीर्वाद लेकर काली कलकत्ते वाली का
सुराग़ लगाऊंगा जमाख़ोर मवाली का।
लातों का भूत है, नहीं है साला गाली काऋ
दबा वेळ बैठा है राशन वेळ बोरे को,
भूखा नचाता है मदारी अपने छोरे को।
जमूरा तरस गया इमरती की आस में,
ठाठ करते हैं बनिए बैठ दीवाने ख़ास में।

तो कहां गया वह मादरजात राशन का बोरा?
ख़ाली हाथ लौटता देखकर ज़ालिम दूर से ही
करारी बांग देगा,
उस्ताद गोरखधंधा चूतड़ की खाल खींचकर
उस्तानी वेळ ब्लाउज़ वेळ तई खूंटी पर टांग देगा।
तो मेहरबानो, व़ळद्रदानो, अपने दुश्मन को पहचानो!
बताओ चीटियां कहां धावा बोल रही हैं?
चूहे कहां बिल खोद रहे हैं?
चिड़िया कहां से दाना पाती हैं?
तिरंगा किस दरवाज़े पर लहरा रहा है?
कारें कहां आ जा रही हैं?
कहां खद्दर की टोपियां और नवदुर्गा वेळ
टैक्नीकलर फ़ळोटू टंगे हैं?
बता दो कि यह नाचीज़ भी जेम्स बांड का दांया बांया
कहलाए।

जमूरा एक तरफ़ळ बैठता है। टेलीफ़ळोन की घंटी बजती है। लाला जम्हाई लेता हुआ फ़ळोन उठाता है। इस अगले संवाद वेळ दौरान लाला अभिनय स्थल का एक चक्कर लगाकर आख़िरी संवाद पर अपनी पहली जगह पर आता है।

लाला : हैलो, कौन? मिस्टर खरबंदा? क्या? गेहूं वेळ बाज़ार में मंदी आ गई है? अरे तो इतना घबराने की क्या बात है? दो-चार मालगाड़ियां बंद कर दो गोदाम में, और ''आउट आफ़ळ स्टाक'' का बोर्ड लगा दो। फ़ळायदा? अरे यही कोई डेढ़-दो लाख का तो हो ही जाएगा। हां-हां।

फिर घंटी बजती है। फ़ळोन रखता है। वुळछ दूर पर दूसरा फ़ळोन उठाता है।

लाला : हैलो कौन? इंस्पैक्टर साहब, अरे भई यह वैळसी नाराज़गी, हमारा ही गोदाम मिला था छापा मारने वेळ लिए? हां याद आया वो आप रंगीन जापानी टेलीविज़न की बात कर रहे थे न? वह आ गया है, आप कहें तो आज ही भिजवा दूं। जी। जी।

घंटी बजती है। यह फ़ळोन रखकर लाला वुळछ दूर पर तीसरा फ़ळोन उठाता है।

लाला : हैलो... कौन? सावित्रीजी? नमस्कार सावित्रीजी, वो जो आपका अंध महाविद्यालय है ना, उसवेळ लिए मैं डेढ़ लाख का चंदा देना चाहता था। नहीं, नहीं चैक नहीं वैळश। एकदम नव़ळद। काम? काम तो वुळछ भी नहीं, वो आपवेळ जो हैं न? मंत्रीजी उनवेळ पास मेरे प्याज़ और चीनी की एक्सपोर्ट की फ़ळाइलें दबी हुई हैं। अगर आपकी नज़रे इनायत हो जाए तो... जी। हां-हां मैं कल ही हाज़िर हो जाऊंगा। वैळश लेकर, धन्यवाद।

घंटी बजती है। फ़ळोन रख कर चौथा फ़ळोन उठाता है। बातें करने का अभिनय करता है, जमूरा उठता है।

जमूरा : लगता है यही है। अबे ओ सिंदबाद जहाज़ी वेळ भतीजे, वुळछ हमें भी दे दे।

लाला : ए, ए, तमीज़ से बात कर छोकरे।

जमूरा : दे दे ना, लाला

लाला : क्या बात है?

जमूरा : अबे निकाल।

लाला : चौकीदार, इस उचक्वेळ को बाहर कर दे, हां।

जमूरा : जय काली कलकत्ते वाली,
तेरा वचन न जाए ख़ाली।
जो भी मेरे सामने आए,
चित्त मुंह वेळ बल गिर जाए।
रास्ते वेळ सांप जाते हैं सरक,
दुश्मनों की आंख में होती है खुरक।
निकाल दे बोरे, नहीं तो यहीं भस्म कर दूंगा।
कल की होती, आज ही तेरी अंतिम रस्म कर दूंगा।

लाला : चौकीदार, रे चौकीदार!

जमूरा : धूम धड़क्का ईचड़ कीचड़ ठांय ठूई ठू
आग बबूला कीकर कंकर ग़ायब हो जा तू
गिली गिली गिली गिली पूळ!

लाला ग़श खाकर गिर पड़ता है। जमूरा लपक कर बोरे को घसीट कर लाता है।

जमूरा : मिल गया, मिल गया, राशन का बोरा मिल गया।
मैंने मंतर क्या पढ़ा, हर फ़ळर्दे मजमा हिल गया।
इक बलब रौशन किया, उस्तादजी वेळ नाम का।
बन गया आख़िर जमूरा, आदमी इक काम का।
;बोरे सेद्ध अबे चल, वहां अंधेरे गोदाम में पड़ा क्या अंडे दे रिया था? चल। उस्तादजी उस्तादजी ले आया।
दे दो ख़ुशख़बरी इन तमाशबीनों को, और बांट डालो।

मदारी : अरे, क्या चिल्ला रहा है?

जमूरा : ले आया।

मदारी : क्या ले आया?

जमूरा : राशन का बोरा।

मदारी : वैळसे?

जमूरा : छीन वेळ।

मदारी : किससे?

जमूरा : चोर से।

मदारी : चोर कौन?

जमूरा : वही।

मदारी : अबे वही कौन?

जमूरा : म्म।

मदारी : अबे वुळछ बोलेगा भी।

जमूरा : म्म्म।

मदारी : क्या मिमिया रया है।

जमूरा : ;खुसपुळसाकरद्ध उस्ताद एक पुलिस वाला खड़ा है। बाद में बताऊंगा।

मदारी : तो कहां है राशन का बोरा?

जमूरा : तुम्हारे पीछे।

जादूगर पलट कर बोरा देखता है। उससे चिपट जाता है।

मदारी : हाय वक्त की ऐसी तैसी। सात पुश्तों का जादू जो मुहैया न कर पाया, वह बालिश्त भर वेळ छोकरे ने कर दिखाया। ख़ैर वुळछ तो हुआ, गल्ला तो ले आया और तमाशबीनों वेळ चेहरे पर हँसी भी आई। तो लड़वेळ खोल दे बोरे को और बांट दे तमाशबीनों में।

खोलने की कोशिश करता है, बोरा नहीं खुलता।

जमूरा : उस्ताद यह नहीं खुलता। इस पर सील लगी है।

मदारी : अरे ज़ोर लगा वेळ खोल दे साली को।

जमूरा : यह कोई सरकारी सील है जो यूं ही खुल जाएगी? यह तो लाले की लगाई हुई है, स्टेनलेस स्टील की बनी है।

मदारी : तो ठैर, यह बोरा अपने आप खुलेगा।
ऐ बेज़ुबान बेबस, बेकस, बेजान, बांगडू बोरे
डंड पेल कर देख तिलस्मी टूटेंगे यह डोरे
मंतर लगते ही प्राणी तू पा जाएगा वाणी
होकर तू आज़ाद कहेगा अपनी स्वयं कहानी।
हैप़ळ मरदेम वेळ जां दादेम रूसियाह तिलस्मी जादूबूद,
पानी का पानी और दूध का दूध।
गिलि गिलि गिलि गिलि पूळ...

बोरा खुलता है। उसमें से अभिनेता निकलता है।

जमूरा : अरे उस्ताद, तुमने तो कमाल कर दिया, धोती को फाड़कर रूमाल कर दिया। बाल योगेश्वर, महेश योगी, साईं बाबा सबको पीछे छोड़ दिया, लाले की लगाई हुई सील को तोड़ दिया।

मदारी : हां तो मेहरबान, बोरा आपवेळ सामने है, और अपनी दास्तान आपको सुनाना चाहता है।

मदारी जमूरा एक तरप़ळ बैठते हैं। बोरा गाता है।

बोरा : इक खेत में जन्मा था मैं मेहनत की आग से
मेहनत वेळ और धरती वेळ सुंदर सुहाग से।
काटा मुझे किसान ने फिर खेत से इक दिन
मंडी में ला वेळ छोड़ दिया खेत से इक दिन।
सेठों ने मेरा भाव किया कौड़ियों वेळ दाम
पल्ले में दो किसान वेळ आए प़ळव़ळत छदाम।
उस दिन से जो शुरू हुआ लंबा सप़ळर जनाब
बेचे ख़रीदे मुझको बस इतने बशर जनाब।
दिन दूने रात चौगुने बढ़ते ही गए दाम
दल्लाल दर दलाल बस चढ़ते ही गए दाम।
इक दिन ख़रीदकर इसी लाले ने मुझको जी
गोदाम में जकड़ दिया साले ने मुझको जी।
अब आया हूं बाहर तो है बस ये ही तमन्ना
दौलत की इस जकड़ से मैं आज़ाद रहूंगा।
मेहनत की मैं औलाद हूं मेहनत की देन हूं
मेहनतकशों की बस्ती में आबाद रहूंगा।

मदारी : जमूरे!

जमूरा : हां उस्ताद।

मदारी : बोरे की दुःखभरी दास्तान सुनकर मेरी आंखें भर आईं हैं।

जमूरा : पोंछ डालो उस्ताद।

मदारी : जमूरे क्या बकता है?

जमूरा : बकता नहीं, कहता हूं। रोओगे तो धुंधला दिखाई देगा। ज़रूरत है साप़ळ देखने की। इस बोरे की मदद और हिप़ळाज़त बहुत सप़ळाई से करनी होगी। नहीं तो तुम रोते रहोगे, बोरा फिर व़ैळद हो जाएगा।

मदारी : हां, तू ठीक कहता है जमूरे। मेहरबानो आपने बोरे की दास्तान सुनी। अब यह बोरा आपकी हिप़ळाज़त, आपकी अदालत में। जिस किसी भाई को आटा, चावल, चीनी, नून-तेल किसी चीज़ की ज़रूरत हो आइए, मत शरमाइए, और अपनी-अपनी ज़रूरत का सामान पाइए। लेकिन अपनी ज़रूरत से ज़्यादा माल न लीजिएगा, नहीं तो इन्हें क्या कहेंगे जमूरे?

जमूरा : इन्हें जमाख़ोर कहेंगे।

मदारी : हां तो साहिबान, जमाख़ोर कहलाए जाने से बचिए, हम चले, बोरा आपकी हिप़ळाज़त में।

बोरे को लेकर चक्कर लगाता है

जमूरा : जिस किसी भाई को आटा, चावल, नून, तेलकिसी भी चीज़ की ज़रूरत हो, आए, और इस बोरे में से ले जाए।

जमूरा जाता है, बोरा जनता का अभिनंदन करता है। लाला को होश आ जाता है। बोरा ग़ायब पाकर बदहवास हो जाता है। अचानक बोरे को देखकर उसकी तरप़ळ संवाद बोलता हुआ लपकता है। तीन बार बोरा उससे बच निकलता है।

लाला : तो तुझे यहां घसीटकर ले आए हैं मेरे मुनाप़ेळ वेळ दुश्मन। मैंने तुझे इसीलिए सात तहख़ानों वेळ अंदर छुपाकर कितना सहेज कर रखा था कि इन भूखे भिखमंगों की नज़र तुझ पर न पड़े। इस तरह तू रोज़-रोज़ दरवाज़े से निकलता

रहा तो व़ळीमतें गिर जाएंगी कि मैं तो बरबाद हो जाऊंगा। तेरी सेवा वेळ लिए दर्जनों चौकीदार रखे थे और तू है कि...

बोरा : हां, हां, मैं निकल भागा हूं उन अंधेरे सीलन भरे गोदामों से जहां तूने मुझे व़ैळद कर रखा था। मैं तेरी तिजोरियां भरने वेळ लिए नहीं हूं लाला।

लाला : कल तक मेरे इशारे पर दुम हिलाने वाले तेरी यह जुर्रत कि मुझे ही आंखें दिखाता है। क्या तू भूल गया मेरे चौकीदार बंदूव़ळों से लैस हैं और मेरे एक ही इशारे पर तुझे रंग से बदरंग कर देंगे।

बोरा : मैंने तेरी हव़ळीव़ळत सभी लोगों को बयान कर दी है□मैं किसी हालत में नहीं लौट सकता। मैं अब यहीं रहूंगा।

लाला : तेरी यह मजाल।

□घसीटकर बोरे को ले जाता है। बोरा चीख़ता है। लाला बोरे वेळ ऊपर अकड़ कर बैठता है। जादूगर और जमूरा आते हैं।□

मदारी : जमूरे सुनी चीख़?

जमूरा : अरे! हमारा राशन का बोरा कहां गया?

□जमूरा इधर-उधर देखता है। दर्शकों से पूछता है। अचानक उसकी नज़र बोरे पर जाती है।□

जमूरा : ओ-ओ! इसकी तो जान पर बन आई है, अल्लाह दुहाई है, दुहाई है।

मदारी : जमूरे कौन है यह चपड़व़ळनाती?

जमूरा : टाटा का पोता□बिड़ला का नाती।

मदारी : अच्छा वही? जिनकी वजह से हमारी चाय मीठी नहीं हो पाती?

जमूरा : हमारे दुश्मन, देश वेळ घाती।

मदारी : सेठजी आपने राशन वेळ बोरे को व़ैळद क्यों कर रखा है? अपने आदमियों से कहिए इसे छोड़ दें।

लाला : इसे छोड़ दूं? जिसवेळ ऊपर मेरा पूरा कारोबार टिका हुआ है। जिसवेळ लिए मैंने हर इलैक्शन से पहले और बाद में लाखों रुपये चंदे में दिए हैं सफ़ेळद टोपी वालों को। और जब चार पैसे कमाने का वक़्त आया तो कहते हो मैं इसे छोड़ दूं। मुझे सरकार की तरफ़ळ से थोक व्यापार करने का परमिट मिला हुआ है।

मदारी : हम वुळछ नहीं जानते हमें तो यह मालूम है कि तेरे पास राशन है।

जमूरा : और हमें राशन चाहिए।

दोनों : आटा दे, चावल दे, तेल दे, नून दे। *;लाला को घेर लेते हैं।द्ध*

लाला : मुझसे दूर रहिए□पुलिस, पुलिस!

□पुलिस का प्रवेश।□

पुलिस : क्या शोर मचा रखा है यहां? ओह, सेठजी आप, क्या बात है?

लाला : क्या बताएं, आजकल तो शरीफ़ळ आदमियों का जीना ही मुहाल हो गया है। अब देखिए, एक तो यह लोग मेरे राशन वेळ बोरे को वरग़ालाकर गोदाम से बाहर खींच लाए, और जब मैं उसे ले जाना चाहता हूं तो यह लोग मुझे धमकियां दे रहे हैं, आंखें दिखा रहे हैं...

पुलिस : *;मारने की मुद्रा मेंद्ध* क्या आप लोगों को इस बात का इल्म नहीं है कि इस देश में एक मज़बूत व़ळानून व्यवस्था व़ळायम है। बिना हमारी मर्ज़ी वेळ पत्ता भी नहीं हिल सकता। चलिए एक अच्छे नागरिक का फ़ळर्ज़ अदा कीजिए□सेठजी की दुकान पर पहुंचिए। लाइन में लगिए। आपवेळ लिए वुळछ न वुळछ होगा इनवेळ पास। चलो भागो... भौं... भौं... भौं...

□पुलिस लाला से पैसे लेता है और जाता है।□

लाला : अबे ओ मुश्टंडे, संभालकर रख दे इस बोरे को। समझा? ऐसा सबव़ळ सिखा कि आगे से बाहर निकलने की हिम्मत न करे□और हां, दुकान वेळ बाहर तख़्ती लगा दे और उस पर लिख दे 'आज राशन नहीं मिलेगा' और इसी वेळ साथ नीचे लिख दे 'दुकान पर आने का रास्ता आगे से नहीं पीछे से है'।

□लाला बोरे वेळ कंधों पर बैठता है।□

मदारी : अबे जमूरे, इस पुलिस वाले ने तो बहुत मारा।

जमूरा : यह सब तेरी वजह से हुआ।

मदारी : अबे सारे पुलिस वाले ही मारते हैं।

जमूरा : बड़ा मारा उन्ने तो!

मदारी : वह पुलिसवाला मारते-मारते एक बात कह रहा था।

जमूरा : क्या कह रहा था?

मदारी : कह रहा था ''लाला की दुकान पर जाओ, लाइन में लगो, तो राशन मिलेगा।'' बेटे हम लाइन में नहीं लगे ना□

जमूरा : लाइन में लगने से राशन मिल जाता है?

मदारी : वह पुलिसवाला तो यही कह रहा था। आख़िर सरकारी आदमी है।

जमूरा : उस्ताद, वह सरकारी आदमी लाला से दस का नोट ले गया□

मदारी : अबे, यह तो उसकी ड्यूटि है।

जमूरा : उस्ताद, मेरी भी ऐसी ड्यूटि लगवा दे ना□

मदारी : सेवा करता रह, वुळछ न वुळछ करवा दूंगा। पर देख, घर में न आटा है, न चावल है, न तेल है, न चीनी है, चल लाला की दुकान पर चलकर ही देख लें□

जमूरा : चल□

□दोनों गाते हैं।□

दोनों : खोलो दरवाज़ा सेठजी, खोलो दरवाज़ा
सेठजी, ओ सेठजी, खोलो तो दरवाज़ा।
चना-चबेना वुळछ तो दे दो, वुळछ तो दे दो खाज़ा
तुम्हीं हमारे अन्न देवता, तुम्हीं हमारे राजा।
खोलो दरवाज़ा सेठजी, खोलो दरवाज़ा....
घर में बच्चे बैन कर रहे बजा-बजा वेळ पेट
ख़ाली है बावर्चीख़ाना, ख़ाली पिर्च-पलेट।
वुळछ तो दे दो मौत नहीं तो लेगी हमें समेट
खोलो दरवाज़ा सेठजी, खोलो दरवाज़ा।

लाला : सुबह-सुबह आ गए रैंकने, नहीं तुम्हें वुळछ काम,
पल भर भी न करने देते, बंदे को आराम।
तोतों जैसा रट रखा है सिरप़ळ यही पैग़ाम।
खोलो दरवाज़ा सेठजी, खोलो दरवाज़ा।

दोनों : खोलो दरवाज़ा सेठजी, खोलो दरवाज़ा।

लाला : क्या चाहिए?

मदारी : सेठजी, एक किलो चीनी चाहिए,

जमूरा : पांच किलो आटा,

मदारी : और एक लीटर मिट्टी का तेल।

लाला : भई चीनी और आटा तो आउट आप़ळ स्टाक है और मिट्टी वेळ तेल पर सरकारी पाबंदी लगी है।

दोनों : सेठजी, हम तो आपवेळ रोज़ वेळ ग्राहक हैं, वुळछ तो ख़याल कीजिए।

लाला : दे तो दूं, पर किसी को कानों-कान ख़बर न हो वरना सब ही झोले पैळलाए चले आएंगे, एकाध किलो पड़ा है, *;इधर-उधर देखकरद्ध* पर हां, दो किलो चीनी वेळ चालीस रुपये लगेंगे!

दोनों : क्या?

लाला : पांच किलो आटा अड़तालीस रुपये का और एक लीटर तेल साढ़े सात रुपये का।

दोनों : क्या, क्या?

मदारी : लालाजी क्या बात करते हैं। आज सबेरे ही रेडियो कह रहा था कि चीनी सात रुपये किलो बिवेळगी।

जमूरा : आटा तीन रुपये किलो,

मदारी : और तेल चार रुपये लीटर,

लाला : तो भाई नाराज़ क्यों होते हो? जाओ उसी रेडियो से ले लो, और इस भाव मिल जाए तो दो चार ट्रक मेरे लिए भी भिजवा देना।

मदारी : देखो लालाजी, सरकारी दाम पर नहीं दोगे तो हम तुम्हारी रपट कर देंगे, हां।

लाला : बेटे एक छोड़ दस रपट लिखवा दो। हमारे पास वुळछ नहीं है।

जमूरा : हमने अपनी आंखों वेळ सामने माल अंदर जाते हुए देखा है।

लाला : क्या देखा है, अंधे वुळछ नहीं देखा। जो भाव बता दिया उससे कम न होगा, हां।

मदारी : लालाजी तुम्हारे तो अच्छे-अच्छे भी दाम कम करेंगे।

लाला : बिटुआ अगर दाम ही कम करने होते तो चुनाव में लाखों रुपये चंदा न देते। हमारी कमाई कोई फोकट की है?

मदारी : लालाजी, तुमने इतनी बड़ी बात कह दी, अब हम भी देख लेंगे। चल जमूरे।

लाला : जा-जा, जो जी में आए कर ले। हम कह चुवेळ हेंगे। *;जाता है।द्ध*

मदारी : जमूरे।

जमूरा : हां उस्ताद।

मदारी : चीनी नहीं मिली।

जमूरा : तो मैं क्या करूं?

मदारी : आटा नहीं मिला।

जमूरा : तो मैं क्या करूं?

मदारी : मिट्टी का तेल नहीं मिला।

जमूरा : तो मैं क्या करूं?

मदारी : तो लेट ही जा।

जमूरा : हमारे उस्ताद में यही ख़राबी है। जब वुळछ नहीं बन पड़ता तो कहता है 'लेट जा'। *;लेटकर चादर ओढ़ता है।द्ध*

मदारी : जनता परेशानी में गिरफ़्तार है।

जमूरा : गिरफ़्तार है।

मदारी : जीना दुशवार है।

जमूरा : दुशवार है।

मदारी : महंगाई की मार है।

जमूरा : बड़ी-बड़ी मार हैं।

मदारी : अबे तो कोई उपचार है?

जमूरा : हां, है।

मदारी : तो बोल।

जमूरा : बोल दूं?

मदारी : राज़ को खोल।

जमूरा : खोल दूं?

मदारी : एकदम खोल दे।

जमूरा : तो उस्ताद, खोल दो तिलिस्मी गैराज और निकाल बाहर करो उड़न खटोले को।

मदारी : काहे?

जमूरा : जमूरा अखिल भारतीय दौरे पर जाएगा।
मदारी : काहे ?
जमूरा : पकड़ वेळ लाने एक मंत्री को।
मदारी : काहे ?
जमूरा : जवाबदेही की ख़ातिर।
मदारी : लड़वेळ, तेरे इरादे तो नेक हैं, पर तू यह सब करेगा वैळसे?
जमूरा : बैठ उड़न खटोले पे गश्त मारेगा बंदा
दूर-दूर पैळलाएगा अपना जादुई फंदा।
पेळर देगा अच्छे-अच्छों की गर्दनों पर रंदा
किसी को देगा घूस, और किसी को देगा चंदा।
और निकाल लाएगा हर नदी-नाले,
पहाड़ी-खाले या मकड़ी वेळ जाले से,
किसी न किसी मंत्री, या मंत्रीनुमा संतरी
या ऐसे ही किसी षड़यंत्री को
और हाज़िर करेगा जनता की अदालत में।
मदारी : हां तो दोस्तो, मैं उड़नखटोला निकालता हूं, आप ज़ोर से ताली बजाइए।

मदारी डमरू बजाता है। जमूरा चादर वेळ नीचे से अपनी टांगे और हाथ उठाकर उड़ता है।

मदारी : लड़वेळ, लौट आ।
जमूरा : लौट आया *;फिर सीधा लेटता है।ध्द*
मदारी : क्या देखा?
जमूरा : सभी मंत्री कक्ष खाली पड़े हैं।
मदारी : गृह मंत्री कहां हैं?
जमूरा : आसाम और पंजाब वेळ बीसवें दौरे पर गए हैं।
मदारी : खाद्य मंत्री कहां हैं?
जमूरा : इलाहाबाद में जनता लैट्रिन का उद्घाटन कर रहे हैं।
मदारी : अबे तो कोई है भी राजधानी में?
जमूरा : हां, है, पर अभी व्यस्त है। आराम करने में।
मदारी : कहां आराम कर रहा है?
जमूरा : ओबराय इंटरकौंटीनैंटाला
मदारी : यह क्या मेरे लाला?
जमूरा : अंतर्राष्ट्रीय धर्मशाला।
मदारी : तू उसे ही पकड़ वेळ ला। *;जाता है।ध्द*
जमूरा : ठक ठक ठक ठक।
आवाज़ : *;नशे में धुतध्द* कौन है बे?
जमूरा : सरकार, जनता का हरकारा।

काला चश्मा और टोपी पहने, अंगवस्त्रम् लटकाए खड़ा होता है।

मंत्री : जनता! यह किस चिड़िया का नाम है?
जमूरा : वही जिसवेळ अंडों से वोट निकलते हैं, हुज़ूर।
मंत्री : ओ, यू मीन द पीपुल। द टायलिंग मासिज़?
जमूरा : यैस।
मंत्री : क्या मांगता है पीपुल?
जमूरा : इंसाफ़ळ।
मंत्री : हम इंसाफ़ळ करेगा। ज़रूर करेगा।
जमूरा : तो आइए मेरे साथ। *;मंत्री लड़वेळ वेळ कंधे पर खड़ा होता है।ध्द*
मदारी : जमूरे लौट आ।
जमूरा : लौट आया।
मदारी : क्या लाया?
जमूरा : मंत्री।
मदारी : मंत्री! तो कर दे मुनादी तमाशबीनों में,
बिठा दे ख़ौफ़ळ सबवेळ सीनों में,
मंत्री अर्श से ज़मीं पे आया है,
जाने क्या व़ळहर साथ लाया है,
इसवेळ पीछे कोई घोटाला है,
लगता है दाल में वुळछ काला है।
जमूरा : ख़ल्क ख़ुदा का, मुल्क ज़मींदार का, इंतेज़ाम सरमायेदार का और हुक्म उनवेळ ताबेदार का, हर ख़ासोआम को इत्तला दी जाती है कि समाजवादी बादशाह, वालिए बेताज, शहनशाहे राशन पानी, ज़िल्ले सुबहानी, जनाब मंत्री महोदय पधार रहे हैं। फ़ळरियादी एक-एक करवेळ हुज़ूर में आएं और अपने दुःख का हाल सुनाएं।
मंत्री : कोई ज़रूरत नहीं, हमें सब मालूम है। हम भी जनता का हिस्सा हैं। जनता का दर्द समझते हैं। महंगाई की मार हम पर भी है। जमाख़ोरों से हम भी आजिज़ हैं। आप लोग तो जानते ही हैं, कि यह सब एक साज़िश है, षड़यंत्र है, विरोधी पार्टियों ने हमारी सरकार को बदनाम करने वेळ लिए ऐसे कई जाल बिछा रखे हैं। आसाम और पंजाब में उपद्रव मचा रखा है, उधर बंगाल और त्रिपुरा की सरकारें वेळंद्र सरकार की नीतियों को लागू करने से इंकार कर रही हैं। फिर विदेशी समस्याएं ईरान, ईराक, अफ़ळगानिस्तान, चीन, कम्पूचिया, पाकिस्तान और अब यह इमरान ख़ान। यह समस्याएं व़ळाबू में आएं, तो महंगाई और जमाख़ोरी की तरफ़ळ भी ध्यान दिया जाए। वैसे हमारी पूरी सहानुभूति आपवेळ साथ है।
मदारी : हैफ़ळ मरदेम वेळ जांदादेम,
रुसियाह तिलिस्में जादूबूद,
पानी का पानी और दूध का दूध।
ख़ामोश! गिली गिली गिली गिली पूळ... व़ैळद करता हूं आवाज़ इस मक्कार पाखंडी की। उस्ताद गोरखधंधे ने सात पुश्तों से जादू दिखाया पर मजमे में झूठे को कभी

बर्दाश्त नहीं किया। जमूरे?

जमूरा : हां उस्ताद।

मदारी : क्या इसीलिए इस मंत्री को सात समुंदर पार से घसीटकर लाया था कि तमाशबीनों वेळ सामने वही घिसी-पिटी सहानुभूति और आंतरिक संकट की बातें दोहराए? साले ने मेरे मजमे का स्टैंडर्ड ही डाउन कर दिया। जमूरे?

जमूरा : हां उस्ताद।

मदारी : साहब लोगों को बता, क्या इस मंत्री ने सच बोला?

जमूरा : नहीं।

मदारी : क्या इसने ईमानदारी से काम लिया?

जमूरा : नहीं।

मदारी : तो क्या इस पर सत्यवाची वशीकरण पूळंक दूं?

जमूरा : पूळंक दो, पूळंक दो।

मदारी : सच्चाई सामने आएगी?

जमूरा : आएगी।

मदारी : झूठ की व़ळलई खुल जाएगी?

जमूरा : जाएगी।

मदारी : हिंगटिंग छट, सच बोल झटपट
सिमसिम फोड़ झूठी बात को तू छोड़
नीम करेला छिपकली, बिच्छू सांप बिझार,
कीकर कोयल वेळंचुली, सौ पर सात सवार।
अंजन, मंजन, दुख भंजन, संकट मोचू वेळ बाप,
शक्ति दिखा दो नीलकंठ मुख से सच पूळटे आप।
ओम् नमोः शिवाय। *;मंत्री जमूरे वेळ कंधे से गिरता है।द्ध* बोल! जो कहूंगा सच कहूंगा और सच वेळ सिवा वुळछ न कहूंगा।

मंत्री : *;मंत्रमुग्ध होकर जमूरे की तरह बोलता हैद्ध* जो कहूंगा सच कहूंगा, सच वेळ सिवा वुळछ न कहूंगा।

मदारी : तू कौन?

मंत्री : मैं कौन?

मदारी : मंत्री, लौट आ।

मंत्री : लौट आया।

मदारी : मंत्री, बैठ जा।

मंत्री : *;बैठता है।द्ध* बैठ गया।

मदारी : मंत्री, लेट जा।

मंत्री : *;लेटता है।द्ध* लेट गया।

मदारी : जमूरे, उठवेळ मंत्री पर काली चादर डाल।

।जमूरा मंत्री पर काली चादर डालता है।।

मदारी : मंत्री!

मंत्री : लौट आया।

मदारी : तू कौन?

मंत्री : मैं कौन।

मदारी : जो पूछूंगा बतलाएगा?

मंत्री : बतलाएगा।

जमूरा : उस्ताद, यह क्या करते हो? इसको जमूरा बना दिया? मैं बेरोज़गार हो जाऊंगा। दाने-दाने को मोहताज हो जाऊंगा।

मदारी : जमूरे, यह मंत्री है, मुझसे बड़े जादूगरों का जमूरा। मेरे तेरे हत्थे तो एक दिन वेळ लिए चढ़ा है। देखता चल।

जमूरा : उस्ताद मैं इसका इंटरव्यू ले लूं?

मदारी : नहीं बेटे, आज तो उस्ताद को ही लेने दे। *।जमूरा जाता है।* मंत्री!

मंत्री : लौट आया।

मदारी : तू मंत्री क्यूं?

मंत्री : मैं मंत्री पेट की ख़ातिर।

मदारी : ग़लत बोलता है, तू मंत्री देश की ख़ातिर।

मंत्री : नहीं उस्ताद, मैं मंत्री पेट की ख़ातिर।

मदारी : मंत्री, तेरे मालिक कौन?

मंत्री : मेरे मालिक सेठ, साहूकार, सरमायेदार, ज़मींदार!

मदारी : ग़लत बोलता है, तेरे मालिक हिंदुस्तान वेळ नागरिक।

मंत्री : नहीं उस्ताद, हिंदुस्तान वेळ ग़रीब नागरिकों को तो मैं जूते की नोंक पे रखता हूं। मेरे मालिक सरमायेदार और ज़मींदार।

मदारी : मंत्री, चुनाव से पहले तो तू देश की जनता वेळ पीछे हाथ जोड़वेळ घूमता था। किसलिए?

मंत्री : वोट की ख़ातिर, उस्ताद। वक़्त पे तो गधे को भी बाप बनाना पड़ता है।

मदारी : मंत्री, तू चुनाव वैळसे जीता?

मंत्री : पैसे वेळ बल पर।

मदारी : पैसा कहां से आया?

मंत्री : मेरे मालिकों ने दिया।

मदारी : किसलिए? मंत्री, सच सच बताइयो।

मंत्री : देश पर राज करने वेळ लिए। व़ळीमतें बढ़ाने वेळ लिए, मज़दूर किसानों को दबाने वेळ लिए।

मदारी : मंत्री।

मंत्री : हां उस्ताद।

मदारी : भाषण देना जानता है।

मंत्री : हां सिर्प़ळ वही तो जानता हूं। यह तो मेरा ख़ानदानी पेशा है।

मदारी : तो शुरू हो जा।

मंत्री : *;खड़े होकरद्ध* भाइयो और बहनो, हमें आपसे पूरी सहानुभूति है। हम जमाखोरों और मुनाप़ळाखोरों वेळ ख़िलाप़ळ सख़्त कार्यवाही करेंगे।

मदारी : मंत्री, यह तो तूने रोज़ का रटा-रटाया, पिटा-पिटाया, किसी और का लिखा-लिखाया, घिसा-घिसाया भाषण सुना दिया। अरे यह लोग बहुत समझदार हैं, इन्हें ज़रा सच्चाई बयान कर।

[मंत्री अपनी टोपी पलटता है।]

मंत्री : भाईयो, बहनो, मेरी बला से आप भाड़ में जाइए। मुझे तो गद्दी चाहिए थी, सो मिल गई। अगर आप सोचते हैं कि मैं लालाजी की दुकान से माल निकालकर उचित दामों पर आप में बांट दूंगा तो माफ़ल कीजिए, आप घनघोर चूतिया हैं।

मदारी : ख़ामोश! बहुत हो गया। ऐसा ज़लील आदमी मेरे मजमें में आकर इतनी सीनाज़ोरी कर जाए। डूब मरने का मुक़ाम है। गिलि गिलि गिलि गिलि पूळ...!

[मंत्री जैसे अचानक जागता है।]

मंत्री : मैं कहां हूं?

मदारी : जनता की अदालत में।

मंत्री : हां, याद आया। तो मैं कह रहा था कि हमारी हार्दिक सहानुभूति आपवेळ साथ है। आप लोग हमें वुळछ समय दीजिए। शीघ्र ही कोई न कोई हल ढूंढ़ निकालेंगे। बदमाशों पर कड़ी नज़र रखी जा रही है...

मदारी : दूर, दूर हो जा। मेरे मजमे को नापाक न कर।

मंत्री : ए मदारी, क्या बकता है।

मदारी : गिलि गिलि गिलि गिलि पूळ!

[मंत्री लड़खड़ाकर निकल जाता है।]

मदारी : उफ़ळ! कितना फ़ळरेब। शर्म आती है। यही हैं हमारे मंत्री? इनसे क्या उम्मीद रखी जा सकती है? जमूरे?

जमूरा : हां, उस्ताद।

मदारी : बांध बोरिया-बिस्तरा और चल दे हरिद्वार की ओर।

जमूरा : उस्ताद, हरिद्वार में तो हर दूसरा आदमी मदारी है। वहां तो अपना धंधा एक मिनट में चौपट हो जाएगा।

मदारी : उस्ताद गोरखधंधा हरिद्वार में धंधा करने नहीं, संन्यास ग्रहण करने जाएगा।

जमूरा : 'संन्यास ग्रहण करने जाएगा?' उस्ताद, अगर तुमने संन्यास ग्रहण कर लिया तो इन काठ वेळ उल्लुओं का क्या होगा! यह ऐसे ही खड़े-खड़े तमाशा देखते रहेंगे, हँसते रहेंगे, तालियां बजाते रहेंगे। चाहे व़ळीमतें कितनी ही बढ़ जाएं, इन पर कितने ही अत्याचार हो जाएं-यह उसवेळ ख़िलाफ़ळ इत्ती-सी आवाज़ भी नहीं उठाएंगे। और तुम्हारे जैसे सच्चाई बयान करने वालों ने संन्यास ग्रहण कर लिया तो इस देश का बंटाधार हुआ ही हुआ।

मदारी : नहीं जमूरे, नहीं। इस देश का बंटाधार नहीं होगा। इस मजमे में खड़े और बैठे तमाशबीन कोई काठ वेळ उल्लू नहीं हैं। यह अच्छी तरह जानते हैं कि आज जो वुळछ मैंने दिखाया वह हाथ की सफ़ळाई नहीं, जादू-टोना नहीं बल्कि पिछले ४० साल वेळ हिंदुस्तान की सच्चाई है। *;दर्शकों सेव्ह* सच्चाई है ना? मेहरबानो, व़ळद्रदानो, मैंने जो मंत्री आज इस मजमे में पेश किया वह किसी जादूगर का भाड़े का जमूरा नहीं, वो हिंदुस्तान का समाजवादी शहनशाह है। मेहरबानो आज का मजमा ख़त्म करने से पहले मैं आपसे एक ही बात कहना चाहता हूं। कल जब आप अपने दफ़्तर, अपनी पै़ळक्ट्री, अपनी दुकान, अपने स्वूळल, कालिज, घर से निकलेंगे तो शायद यह मदारी और यह जमूरा आपको चौक वेळ बीचों-बीच हिंदुस्तान की सच्चाई दिखाने वेळ लिए न मिलें। पर यह मंत्री, यह सेठ, यह पुलिस यह आपको रोज़ मिलेंगे। आपको अपनी आंखें खुली रखनी होंगी, आपको अपने दिमाग़ रोशन रखने पड़ेंगे, आपको सोचना होगा, आपको पै़ळसला करना होगा कि आपवेळ असली दुश्मन कौन हैं।

[डमरू बजाता हुआ जमूरे वेळ साथ निकल जाता है]

o